पर्यावरण अध्ययन में संवाद एक अनुभव

– महमूद खान

कक्षा में बच्चों को बातचीत के अवसर देना, उनकी बातचीत को सुनना, प्रोत्साहित करना और उद्देश्य की दिशा में ले जाना, सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। किसी अवधारणा के बारे में बच्चे क्या–क्या जानते हैं, कैसे जानते हैं और किन सामाजिक संदर्भों से जानते हैं, इसे समझना भी बातचीत का ही हिस्सा है।

पिछले पांच सालों में कुछ स्कूलों में पर्यावरण अध्ययन में काम करते हुए मेरा अनुभव रहा कि इस विषय में शिक्षकों एवं बच्चों के बीच बहुत गुंजाइश है। ऐसे में बच्चे जिन अवधारणाओं के साथ स्कूल आते हैं उनसे शिक्षक अपरिचित रह जाते हैं। मुझे लगता है कि बच्चे अपने परिवेश की बहुत सी जानकारियों के साथ स्कूल आते हैं। यदि उन्हें यह भरोसा हो जाए कि शिक्षक उनकी बात सुनना चाहते हैं। गलत होने पर डांट नहीं पड़ेगी तो फिर वह खुलकर बातचीत करते हैं। ऐसे में संवाद की भूमिका काफी बढ़ जाती है। बच्चों को प्रश्न करने, अपनी राय देने, दूसरों की बात सुनने तथा फिर से सोचकर नयी राय बनाने और सीखने की प्रकिया में नये अवसर मिलते हैं।

1. बतौर शिक्षक सरकारी स्कूलों में आने वाले बच्चों के अन्दर स्कूली ज्ञान को लेकर रुचि जगाने में संवाद की संस्कृति का निर्माण कैसे किया जाए?
2. यदि संवाद बच्चों के साथ जुड़ने एवं उनमें सीखने की रुचि जगाने का जरिया है तो फिर संवाद होता कैसे है? इसके आधार–भूत तत्व क्या हैं? संवाद करते हुए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

पिछले दिनों जयपुर के सांगानेर शहरी इलाके में स्थित सरकारी स्कूलों में जाना हुआ। इस दौरान एक प्राथमिक स्कूल में कक्षा 5 के बच्चों के साथ पर्यावरण अध्ययन विषय में 'पानी के स्रोत्र कहां–कहां' पाठ पर बातचीत हुई।

शुरुआती बातचीत के बाद मैंने बोर्ड पर लिखा 'पानी'। सब बच्चों ने जोर से पढ़ा पानी। मैंने कहा 'बहुत अच्छा'। मैंने पूछा, 'पानी को और क्या कहते हैं ?' बच्चों ने जवाब दिया, 'जल व वाटर'। मैंने उन्हें भी बोर्ड पर लिख दिया। मैंने फिर बच्चों से सवाल किया, 'हमें पानी कहां–कहां पर दिखाई देता है?' बच्चे एक–एक कर बताते गये, मैंने बोर्ड पर सूची बनाई। सूची में–कुंआ, समुद्र, नदी, तालाब, बीसलपुर, गंगा, हैंडपम्प, हौद, गड्ढा, टंकी, नल, बोर, कुण्ड, झरना, खेत में, वर्षा के दौरान सड़क शामिल हुए। मुझे इस सूची से पानी के वास्तविक स्रोत्रों तक बच्चों को लेकर जाना था। इसलिए मैंने सूची में आई चीजों पर एक–एक कर चर्चा करनी शुरू की।

कक्षा में संवाद करने का मेरा उद्देश्य था कि प्रत्येक बच्चा अपने विचार के पीछे के आधार को पहचान सके। उस आधार को दूसरे के नज़रिये से भी देखकर जांच सकें। दूसरे के विचार को तर्क के आधार पर खारिज़ कर सकें, ताकि उसके साथी अपोरिया की स्थिति में आकर अपने विचार को नये सिरे से बनाने की तरफ बढ़ सकें। मैंने भी इस कक्षा में पर्यावरण विषय की जल थीम पर काम करते हुए बच्चों को ऐलन्कस के माध्यम से अपोरिया की स्थिति में लाने का काम किया। जिसकी वजह से कक्षा में बच्चों का बच्चों के साथ तथा बच्चों का मेरे साथ एक बेहतर संवाद स्थापित हो पाया। देखिए नीचे लिखे इस संवाद में कहां–कहां बच्चे एवं शिक्षक, सुकरात की ऐलन्कस युक्ति को काम में ले रहे हैं और कब–कब कुछ बच्चे अपने आपको अपोरिया की स्थिति में पा रहे हैं।

बहुत से बच्चों ने कहा हमने देखा है। मैंने फिर पूछा कि कुंआ कैसा दिखाई देता है? अधिकतर बच्चों ने कहा कि कुंआ गोल तथा गहरा होता है। लेकिन एक लड़की बोली नहीं सर जी कुंआ तो चोकोर होता है।

तभी दूसरे बच्चों ने कहा कि चोकोर कुंआं तूने कहां देखा? लड़की बोली हमारे गांव में जहां से मम्मी पानी भर कर लाती हैं। अब बच्चे सोचने लगे। अधिकतर बोले हमारे गांव में तो ऐसा कुंआ नहीं है। एक लड़के ने कहा कि तूने कुंए में झांककर देखा था कि वह गोल है या चौकोर ? लड़की ने कहा नहीं। तो फिर तुम कैसे कह रही हो कि कुंआ चौकोर था ? लड़की ने कहा कि वह अपनी मां के साथ कुंए पर गई थी उस के मुंह पर चार पत्थर की पट्टी लगी थी महिलाएं चारों ओर से पानी भर रही थीं। वह लड़का फिर बोला कि पानी भरने की सुविधा के लिए चारों तरफ पत्थर की पट्टी लगाई जाती है लेकिन कुंआ गोल ही होता है।

बच्चों के आपसी तर्क–वितर्क को सुनकर मैंने कहा कि अधिकतर कुंए गोल ही होते हैं। लेकिन कुछ पहाड़ी इलाकों में जहां चट्टान काटकर कुंए बनाएं जाते हैं वहां जरूरी नहीं होता कि कुंए एक दम गोल ही हों। इसके बाद समुद्र पर बात की गई। बच्चों को समुद्र के आकार का कोई अंदाजा नहीं था। कुछ बच्चे स्कूल के मैदान से दोगुना तो कुछ प्रताप–नगर कॉलोनी जितना बड़ा मान रहे थे। मुझे यह समझने में बड़ी परेशानी महसूस हो रही थी कि जिन बच्चों के अनुभव में समुद्र नहीं है ,उन्हें उसके बारे में कैसे समझाऊं?

नदी के बारे में अधिकतर बच्चे कह रहे थे की नदी आड़ी टेढ़ी होती है तथा बहुत लम्बी भी होती है। लेकिन चर्चा से समझ आ रहा था कि बच्चे नदी और नहर की अवधारणा में फर्क नहीं कर पा रहे थे। इसके बाद मैंने विचार बदला तथा तय किया कि सूची में आए शब्दों को क्रमिकता के बजाए बच्चों के अनुभव वाले शब्दों की अवधारणाओं पर पहले चर्चा की जाए।

जयपुर के पास टोंक जिले में बीसलपुर डैम बना है। यहां से जयपुर शहर के बड़े हिस्से के लिए पीने का पानी आता है। बच्चों के साथ चर्चा से पता चला कि अधिकतर को यह तो पता था कि बीसलपुर से पानी आता है। लेकिन बीसलपुर है क्या? नदी, समुद्र, बांध या बावड़ी यह किसी को पता नहीं था। उसके आकार के बारे में भी किसी तरह का अनुमान बच्चों के पास नहीं था। यहां बच्चों को बोर्ड पर एक चित्र बनाकर यह समझाने का प्रयास किया गया कि आमतौर पर नदी, तालाब, तथा बांध किस तरह के दिखाई देते हैं। बाद में उनकी पुस्तक के चित्रों की भी सहायता ली गई।

ये बच्चे अधिकतर भवन निर्माण में लगे प्रवासी मजदूर परिवारों से थे। इनके माता–पिता आस पास बन रही

ऊंची–ऊंची इमारतों में मजदूरी करते हैं। बच्चों को कुण्ड, बोरवेल, हैंडपम्प तथा हौद की जानकारी बहुत अच्छी तरह से थी। ये सब इनके अनुभव में शामिल हैं। सबसे पहले मैंने बच्चों से पूछा कि 'हौद क्या होती है?' बच्चे हंसने लगे। मैंने फिर कहा कि 'क्या होती है हौद बताओ ना।' बच्चे बोले 'जब मकान का काम शुरू करते हैं तो सबसे पहले पानी की जरूरत के लिए एक तीन गुणा 4 या 5 का गड्ढा खोदकर उसमें प्लास्टिक की सीट बिछाकर पानी भर दिया जाता है इसे ही हौद कहते हैं।' स्कूल के हैंडपम्प की ओर इशारा करते हुए बोले 'सर, इसे तो आप जानते ही होंगे यह हैंडपम्प है। जो हैंडपम्प गहरा होता है उसको देर तक चलाना पड़ता है तब पानी आता है, जबकि कम गहराई वाले से जल्दी पानी बाहर आने लगता है।' मेरे लिए यह कम आश्चर्यजनक नहीं था कि बच्चों को यह अनुभव था कि गहरे हैंडपम्प से पानी देर में बाहर आता है जबकि कम गहरे हैंडपम्प से जल्दी पानी बाहर आता है। यह पूछने पर कि ऐसा क्यों होता है, कहा गया कि 'रास्ता कम या ज्यादा तय करना पड़ता है इसलिए।'

मैंने कहा कि 'कुण्ड क्या होता है?' बच्चे बोले 'सर, मकान में नल के पानी को स्टोर करने के लिए एक चौकोर पक्का कुण्डा जमीन के अन्दर बनाया जाता है। बाद में उसमें मोटर लगाकर पानी ऊपर की मंजिलों पर चढ़ाया जाता है।' इन्हीं संदर्भों पर बात करते हुए मैंने आगे बढ़ने का प्रयास किया। मैंने यह जानने का प्रयास किया कि उनके परिवार को पीने का पानी कहां–कहां से मिलता है? इसके जवाब में कुंआ, नल, ट्यूबवेल, नदी, टंकी एवं हैंडपम्प को बताया गया।

मैंने अगला सवाल पूछा कि 'इन सब में (कुंआ, नल, ट्यूबवेल, नदी, टंकी एवं हैंडपम्प में) पानी कहां से आता

होगा?' बच्चों ने कहा कि वर्षा से आता है। मैंने कहा, 'वर्षा कहां से आती है?' जवाब मिला– ऊपर से। मैंने पुनः पूछा, 'ऊपर कहां से?' 'आसमान से।' 'आसमान से कैसे आती है वर्षा ?' एक बच्चे से जवाब मिला 'सर, वर्षा बदलों से होती है।' दो बच्चों ने कहा कि 'नहीं, सर वर्षा तो भगवान जी करते हैं।' एक बच्चे ने कहा कि शंकर भगवान की चोटी से वर्षा होती है। थोड़ी चर्चा आगे बढ़ी तो जो बच्चा कह रहा था कि वर्षा बादलों से आती है वह भी कहने लगा कि भगवान ही वर्षा करते हैं।

बच्चे बहुत आत्मविश्वास के साथ बात कर रहे थे, इसलिए मैंने कहा कि मान लेते हैं कि वर्षा भगवान ही करते हैं। 'तो ये बताओ कि भगवान रहते कहां हैं?' जवाब मिले पहाड़ की चोटी पर, हिमालय पर्वत पर, आसमान में ,दूसरी दुनिया में आदि। लेकिन बहुमत इस बात के साथ था कि भगवान हिमालय पर्वत पर रहते हैं।

मैंने कहा कि 'दुनिया में सब जगह तो हिमालय पर्वत है नहीं और भगवान हिमालय पर्वत पर रहते हैं, तो फिर उन देशों में वर्षा कैसे करते होंगे जहां वे रहते ही नहीं ?' इस प्रश्न के बाद बच्चे कहने लगे कि 'भगवान तो हर जगह ही होता होगा।' 'कक्षा के एक बच्चे ने पहले कहा था कि भगवान हर जगह होता है, लेकिन उसकी अवाज दब गई थी, वह बच्चा एकदम उछलकर बोला मैं तो पहले ही कह रहा था कि भगवान हर जगह होता है।' यहां पर मैं दुविधा में फंस गया कि कक्षा 5 के बच्चों के साथ भगवान के होने या न होने पर बात की जाए या नहीं ?

अब सवाल यह था कि कैसे यह बात पुष्ट की जाए कि वर्षा बादलों के माध्यम से होती है। इस चर्चा में यह बात भी हो गई की हम सबको भी भगवान ने बनाया है तथा हर जीव को भी भगवान ने बनाया है।

मैंने कहा 'भगवान देखा है किसी ने?' एक बच्चे का जवाब आया 'भगवान ऐसे नहीं दिखाई देता, उससे मिलने के लिए मरना पड़ता है। जो मरकर ऊपर चले जाते हैं वही उनसे मिल पाते हैं। हमारे गांव में जब भी कोई व्यक्ति मर जाता है तो लोग कहते हैं कि वह भगवान को प्यारा हो गया, यानि वह भगवान के पास चला गया।' 'मैंने कहा कि, फिर भगवान हर जगह कैसे रहते हैं, यदि उनके पास जाना पड़ता है ?' बच्चे फिर से सोच में पड़ गए। मैंने कहा कि चलो हम भगवान की चर्चा यहां बंद करते हैं। दरअसल, मुझे अपने मुद्दे पर लौट आने के लिए यह सब करना पड़ा।

बात आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा कि 'अब हम वापस यह चर्चा करते हैं कि यदि वर्षा बादलों से होती है तो ये बादल कहां से आते हैं या ये बनते कैसे हैं?' एक बच्चे ने कहा कि 'सर, मुझे पता है कि बादल कैसे बनते हैं।' मैंने कहा कि सबको बताओ। उसने कहा कि जब घनी तेज आग लगती है तो उसका धुआं आसमान में जाकर बादल बनाता है। इसमें दूसरे बच्चे ने जोड़ा कि 'हवाई जहाज के धुएं से भी बादल बनते हैं।' मैंने कई बार आसमान में हवाई जहाज को उड़ते हुए देखा है तथा उसके पीछे लम्बी बादल की लाईन भी बनती देखी है। कक्षा की एक लड़की ने पूछा कि 'यदि धुएं से बादल बनते हैं तो उसमें पानी कहां से आता है?' अब कक्षा में एकदम सन्नाटा था। सब मेरी ओर देखने लगे। 'मैंने कहा, मुझे तो पता नहीं है चलो पुस्तक खोलते हैं तथा पानी वाले पाठ को देखते हैं कि उसमें इसका जवाब है या नहीं।' सभी बच्चों ने तुरंत अपनी अपनी पुस्तक में पानी वाला पाठ खोलकर पढ़ना शुरू किया। पाठ अभी पूरा नहीं पढ़ा गया था कि स्कूल की घंटी लग गई। मैंने कहा कि मैं दोबारा आपके स्कूल में आऊंगा जब तक आप बादल का बनना तथा वर्षा के होने के कारण पता लगाने का प्रयास करना।

अगले कुछ दिन के अंतराल के बाद मैं एक बार फिर इसी स्कूल में, इसी कक्षा के बच्चों के बीच था। पिछले दिन के अनुभव से मुझे समझ में यह आया कि छोटी कक्षा में संवाद की भी एक सीमा होती है। अतः इस बार मैं उक्त मुद्दों से जुड़ी एक फिल्म लेकर आया था। यह फिल्म विज्ञान प्रसार द्वारा बनाई गई है तथा इसका नाम है – पृथ्वी के रहस्य। पाठ पढ़ने के बाद, पाठ्यपुस्तक के चित्रों पर बात करना तथा फिल्म दिखाना मेरी योजना का हिस्सा थी। आज फिर से जल के स्रोतों पर आधारित अपने पिछले काम को कुछ और आगे ले जाने का प्रयास किया। मैंने पूछा कि बताओ, पिछली बार हमने कहां तक काम किया था ? बच्चों ने पाठ को याद करते हुए कहा कि बादल कैसे बनते हैं तथा वर्षा कैसे होती है, इस पर काम छूट गया था।

मैंने कहा कि 'आज हम इस पर काम करेंगे लेकिन पहले हम यह भी जानेंगे कि नहर व नदी में क्या अंतर होता है। उस दिन आप यह अंतर भी नहीं बता पाए थे।' गणेश नाम के बच्चे ने कहा कि 'सर नहर छोटी होती है और नदी बड़ी होती है।' आसिफ ने कहा कि कुछ नहर कुछ नदियों से बड़ी भी होती हैं। मैंने कहा कि 'हां 'कुछ नदी कुछ नहरों से लम्बाई में छोटी/बड़ी होती हैं। लेकिन यह सब नदियों पर लागू नहीं होता। दूसरा अंतर बताओ?' एक दूसरे लड़के ने कहा कि 'नहर की बनावट एक जैसी होती है, जबकि नदी उबड़–खाबड़ होती है।'

मैंने पूछा कि 'नदी और नहरों में पानी कहां से आता है ?' दरअसल मैं यहां पर अपेक्षा कर रहा था कि बच्चे कहेंगे कि नदी में बरसात से तथा नहरों में बांध से, लेकिन मेरी अपेक्षा गलत साबित हुई। बच्चों ने कहा कि वर्षा से। मैंने फिर कहा कि पक्की बात है। बच्चे सोचने लगे लेकिन वे किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे।

अगला सवाल किया गया कि 'नदी ऊबड़–खाबड़ तथा नहर एक जैसी क्यों होती है?' कक्षा की एक लड़की बोली कि 'नहर पक्की होती है तथा नदी कच्ची। इसलिए नदी उबड़–खाबड़ होती है।' गणेश बोला 'हमारे गांव में तो नहर कच्ची है।' आसिफ ने कहा कि 'सर आप ही बता दीजिए कि नहर कच्ची होती है या पक्की।' कुछ बच्चे इस चर्चा से बिल्कुल बाहर नजर आए। दरअसल, उन्होंने न तो नदी देखी और न ही नहर।

मुझे लगा की यहां मेरी भूमिका बनती है कि नहर व नदी के फर्क को समझा दिया जाए। मैंने बताया कि नदी प्राकृतिक होती है। भूमि के ढाल की वजह से वर्षा का पानी पहाड़ों से जब तेज गति से बहता है तो वह भूमि में कटाव करता हुआ आगे बढ़ता है, इसलिए ही नदी ऊबड़–खाबड़ होती है। जबकि नहरों का निर्माण मनुष्यों द्वारा अपनी जरूरत को ध्यान में रखकर किया जाता है। हां, यह सही बात है कि कुछ नहर पक्की बनाई जाती हैं और कुछ कच्ची ही होती हैं। एक और बात जिसकी तरफ बच्चों का ध्यान दिलाया गया कि नहर बांध से निकाली जाती हैं और बांध नदी पर बनाया जाता है। यानि नहर और नदियों का उद्‌गम स्थल अलग–अलग होता है। यहां पर उनकी पाठ्य–पुस्तक में दिए गए बीसलपुर बांध एवं उससे निकलती नहरों के चित्र की भी मदद ली गई।

इसके बाद मैंने कहा कि 'अब हम बादल और वर्षा की बात करेंगे। बताओ बादल कैसे बनते हैं?' आसिफ ने कहा कि 'सर, बादल तेज अंधड़ से जब धूल उड़कर आसमान में चली जाती है तो बादल बनते हैं।' एक दूसरे लड़के ने कहा कि 'सर, हम बतायें।' हां बताओ, उसने कहा कि 'धूल के कणों के साथ जब सूरज की तेज गर्मी से पानी भाप बनकर आसमान में चला जाता है तो दोनों मिलकर बादल बनाते हैं।' पिंकी ने कहा कि 'धूल, मिट्‌टी, धुंआ आदि के कण जब भाप में मिल जाते हैं तो बादल बनते हैं। जब बादलों में अधिक पानी हो जाता है तथा उसका वजन बढ़ जाता है तो वह वर्षा में बदल जाता है।' इतनी चर्चा के बाद मुझे लगा कि अब फिल्म को दिखाया जाना उचित होगा क्योंकि इस फिल्म में विस्तार से बादल बनने तथा वर्षा होने को समझाया गया है। फिल्म देखते हुए जहां जरूरत महसूस हुई मैं बीच–बीच में समझाता रहा। बच्चों ने फिल्म को रुचि लेकर देखा।

संवाद कोई रोजमर्रा की गपशप नहीं है और न ही वह निरुद्‌देश्य बातचीत है। संवाद तो दो या दो से अधिक लोगों के बीच एक सार्थक और उद्‌देश्यपूर्ण बातचीत है। संवाद के सन्दर्भ में मुझे सुकरात आज भी उतने ही प्रासांगिक लगते हैं जितने कि ढाई हजार साल पहले थे। सुकरात एक बेहतरीन शिक्षक भी थे। उनका मानना था कि शिक्षक की जिम्मेवारी केवल कुछ विषय सिखा या रटा देना भर नहीं है। बल्कि यह सिखाना भी है कि उन विषयों में सोचते कैसे हैं, सिद्धांत कैसे गढ़ते हैं, नया ज्ञान कैसे बनाते हैं? उदाहरण के लिए विज्ञान, समाज विज्ञान, गणित आदि में नए ज्ञान का सृजन कैसे होता है? उनका मानना था कि संवाद सीखने के लिए एक आधार–भूत प्रक्रिया है। छात्रों से तर्क–वितर्क करना, उनसे उनकी राय, विचार और परिभाषाएं पूछना, फिर उनमें तार्किक गलतियां, खामियां दिखाना, उनको परिष्कृत करवाना ये संवाद की मूलभूत प्रक्रियाएं हैं। इन प्रक्रियाओं से गुजरते हुए ही छात्र–छात्राएं यह सीख पाते हैं कि उन्हें किस प्रकार चिंतन–मनन करना चाहिए।

सुकरात के लिए ऐलेन्कस उनकी प्रिय युक्ति थी। इस युक्ति के माध्यम से सामने वाले की बात को खारिज किया जाता है। आखिर खारिज करते क्यों हैं? सुकरात इस युक्ति का इस्तेमाल अपोरिया की स्थिति प्राप्त करने के लिए करते थे। अपोरिया एक ऐसी स्थिति है जहां सामने वाले व्यक्ति को उसकी बात, तर्क में असंगतता या दोष दिखाया जाता है। वह अपने दोष या असंगतता को साफ–साफ देख पाता है। ऐसी स्थिति को अपोरिया कहते हैं।

मूलभूत तत्व जो हमें सुकरात के संवाद करने के अन्दर दिखते हैं वो कुछ इस प्रकार हैं–

- पहले दोनों पक्षों को यह तय करना होता है कि मुद्‌दा क्या है? जिस पर हम बात करने वाले हैं। फिर उस पर दोनों पक्षों की क्या राय हैं यह साफ–साफ बताया जाना। उदाहरण के लिए उनकी मान्यताएं, परिभाषा या तर्क क्या हैं? आदि।
- दूसरे चरण में कोई एक पक्ष दूसरे पक्ष की मान्यताओं में असंगतता को दिखाते हैं ताकि अपोरिया की स्थिति पैदा हो सके।
- तीसरे चरण में इस असंगतता को कैसे दूर करें? यह

सोचा जाता है और क्या ज्यादा परिष्कृत मान्यताएं हो सकती हैं? इस पर विचार किया जाता है।

मुझे लगता है कि स्कूल के मेरे अनुभव में भी कुछ इस प्रकार की प्रक्रियाएं मेरे और बच्चों के बीच चल रही थीं इसलिए ही मैंने कक्षा–कक्ष में संवाद की संस्कृति को बढ़ावा देने की बात उठाते हुए यह कहने का प्रयास किया है कि यदि शिक्षक व बच्चों के बीच संवाद की संस्कृति बनती है तो न सिर्फ बच्चों के सीखने की गति बढ़ेगी बल्कि वो यह भी सीखने की ओर अग्रसर होंगे कि सही समझ बनाने के लिए सवाल उठाना, तर्क करना तथा दूसरों की बात सुनना कितना जरूरी होता है।

"राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 का दस्तावेज अध्यापकों की भूमिका देखता है कि वह बच्चों को अभिव्यक्ति के लिए समुचित स्थान व अवसर दें। साथ ही निश्चित प्रकार की अंतःक्रिया (संवाद) स्थापित करें। उन्हें नैतिक सत्ता की परम्परागत भूमिका से बाहर निकलने तथा बिना निर्णयात्मक हुए समानुभूति के साथ कैसे सुनना होता है सीखना होगा। बच्चों को एक–दूसरे को सुनने में सक्षम बनाना होगा। शिक्षार्थियों की समझ को समेकित कर, रचनात्मक रूप से उस समझ की सीमाएं बढ़ाते हुए इस बात के प्रति सचेत भी करना होगा कि मतभेद या अंतर किस प्रकार व्यक्त किए जा सकते हैं। परस्पर विश्वास का वातावरण कक्षा को बच्चों के लिए एक ऐसा सुरक्षित स्थान बना देगा जहां वे अनुभव बांट सकें, जहां विवादों को स्वीकार कर, उन पर रचनात्मक प्रश्न उठाए जा सकें, और जहां विवादों के हल, परस्पर सहमति से निकाले जा सकें। चाहें ये हल कितने ही अस्थायी क्यों न हों। विशेषकर लड़कियों व वंचित सामाजिक वर्ग से आए बच्चों के लिए कक्षा व स्कूल ऐसे स्थान होने चाहिए जहां वे निर्णय लेने की प्रक्रिया पर चर्चा कर सकें, अपने निर्णय के आधार पर प्रश्न उठा सकें तथा सोच–समझ कर विकल्प चुन सकें।"

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के दस्तावेज में अध्यापकों से अपेक्षा के संदर्भ में बच्चों के साथ हुए इस संवाद से मेरे सामने कई प्रश्न उभर कर आए हैं। मुझे लगता है कि बतौर शिक्षक इन सवालों की तरफ भी सोचना बहुत जरूरी है। मैंने पाया है कि कई बार शिक्षक बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान को नज़रअंदाज करके पुस्तकीय जानकारी पर ही केन्द्रित रह जाते हैं। बच्चे बहुत से मुद्दों पर गलत या अधूरी सी अवधारणा अपने साथ लेकर स्कूल आते हैं यदि उन्हें जाने बिना एक शिक्षक उन्हीं मुद्दों पर नई अवधारणा बच्चों को देने का प्रयास करेंगे तो क्या ये बच्चों के सीखने को प्रभावित नहीं करेगा?

इस तरह के सवालों में हम पर्यावरण की शिक्षा से विज्ञान शिक्षा की ओर बढ़ने के अवसर खोज सकते हैं। एक और सवाल उभर कर आया कि अक्सर स्कूल की तरफ से अभिभावकों पर जिम्मेदारी डाल दी जाती है। यह सही है कि अभिभावकों को भी अपने बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में भूमिका अदा करना चाहिए या कम से कम इस तरफ जागरूक तो रहना ही चाहिए। लेकिन हमारे देश में बहुत से बच्चे अभी पहली पीढ़ी के हैं जिन्हें स्कूल जाने का मौका पहली बार मिल पा रहा है। इस स्कूल में भी ज्यादातर बच्चे मजदूर परिवारों से आ रहे हैं। निर्माण कार्य से जुड़े परिवारों के बच्चों से यह कहा जाना कि इन सवालों के बारे में अपने परिवार से जानकारी लेकर आओ कितना उचित है? एक और बात जिसे मैंने महसूस किया वह यह थी कि शिक्षक और बच्चों के बीच होने वाले संवाद का महत्व। आखिर हमारे स्कूलों में बच्चों को कक्षा में आपसी संवाद या शिक्षक के साथ संवाद का अवसर क्यों नहीं दिया जाता। हमने देखा है कि आपसी संवाद से बच्चों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति तथा तर्क करने की क्षमता का विकास होता है। संवाद ही है जो हमें अपने अनुभवों के अलावा भी बहुत सी बातों पर चर्चा कर समझ बनाने का अवसर देता है। स्कूली संवाद बच्चों को ऐसे मौके भी दे सकता है कि वे घर के अनुभवों और वहां पैदा हुई चिंताओं के बारे में बात कर पाएं। संवाद निःसंदेह स्पष्टता लाता है लेकिन छोटी कक्षाओं में संवाद की भी एक सीमा होती है इसलिए शिक्षण के दौरान पुस्तकों के साथ अन्य शिक्षण सामग्री का प्रयोग भी महत्वपूर्ण हो जाता है। मसलन– पाठ्य पुस्तक, चित्र, फिल्म, भ्रमण के अनुभव एवं स्लाइड शो आदि।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, जयपुर, राजस्थान से जुड़े हैं)

**अपोरिया : पाठ की वह गांठ जो पकड़ में आते ही अर्थ एकदम से खुलने लगता है। यह कोई बिम्ब, प्रतीक, रूपक या कोई संदर्भ कुछ भी हो सकता है।*